License Information

Study Notes - Book Intros (Tyndale) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes - Book Intros (Tyndale)

एज्रा

एज्रा परमेश्वर के अद्भुत कार्यों का वर्णन करते हैं, जिसमें उन्होंने सत्तर वर्षों की बँधुआई के बाद कई इस्राएलियों को यरूशलेम वापस लाया। पुनर्स्थापित समाज अन्यजाति प्रभावों का विरोध करने, मन्दिर का पुनर्निर्माण करने और उन लोगों के जीवन में पाप से निपटने के लिए संघर्ष कर रहे थे, जिस दौरान उन्होंने परमेश्वर के बजाय संसार के मूल्यों का पालन करना चुना। एज्रा में हम देखते हैं कि जो परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उनके वचन का निष्ठापूर्वक पालन करते हैं, उन लोगों के लिए परमेश्वर कैसे सुरक्षा और जरूरतों का मुहैया करते हैं ।

एज्रा

पृष्ठभूमि

458 ईसा पूर्व में एज्रा के यरूशलेम आने से लगभग 130 साल पहले, परमेश्वर ने यहूदा की लगातार दुष्टता को दंडित करने के लिए बाबेल को शहर को नष्ट करने, मंदिर को ध्वस्त करने और हज़ारों लोगों को बँधुआ बनाने के लिए भेजा था (देखें 2 रा 25:1–30)। बाबुल में बँधुआई के दौरान, इस्राएली घर बनाने, बगीचे लगाने और कुछ धार्मिक स्वतंत्रता के साथ एक अच्छा जीवन जीने में सक्षम थे (यिर्म 29:4–5)। कुछ लोगों ने सत्ता के पद प्राप्त किए (दानि 3, 6)।

परमेश्वर ने सत्तर वर्ष के बाद अपने लोगों को पवित्र भूमि पर वापस भेजने का वादा किया था (2 इति 36:21; यिर्म 25:12; 29:10)। लगभग ईसा पूर्व 559 में, फारसी राजकुमार कुस्रू द्वितीय ने मादियों को वश में किया और उन्हें मिलाकर फारसी साम्राज्य बनाया। फिर, ईसा पूर्व 539 में, फारसियों ने बाबेल को हराया, जिससे इस वादे को पूरा करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। 538 ईसा पूर्व में, कुस्रू ने यहूदी लोगों को बाबेल छोड़ने की अनुमति देना शुरू किया। शेशबस्सर ने निर्वासितों के पहले दल का नेतृत्व किया जो अपने देश लौटे (एज्रा 1:1–8)।

जब इस्राएल और यहूदा के लोगों को विदेशी भूमि पर निर्वासित कर दिया गया था, तो अश्शूरियों और बाबेलियों ने इस्राएल की भूमि पर अन्य विजित लोगों को बसाया था। वापस लौटने वाले यहूदी निर्वासितों ने पाया कि ये विदेशी उस भूमि पर बसे हुए हैं जिसे वे पुनः प्राप्त करना और पुनर्निर्माण करना चाहते थे। इन विदेशियों ने यह दावा किया कि वे यहूदियों के समान परमेश्वर की आराधना करते हैं, लेकिन वास्तव में वे एक “मिश्रित धर्म” की वकालत करते थे जो अन्यजाति और यहूदियों के विचारों और प्रथाओं को मिलाते थे। ये बसे हुए विदेशी लोग लौटने वाले यहूदियों के साथ आराधना करना चाहते थे। यहूदियों ने इससे उत्पन्न होने वाले आत्मिक समझौते को पहचाना (4:3) और समाज में विदेशियों को कोई हिस्सा देने से इनकार कर दिया। परिणामस्वरूप, यहूदियों के समाज को भूमि में रहने वाले विदेशियों से गंभीर विरोध का सामना करना पड़ा। यद्यपि इस रुख के कारण कई वर्षों तक संघर्ष और मंदिर पुनर्निर्माण में देरी हुई, बँधुआई ने यहूदियों को सिखाया था कि उनके विश्वास की पवित्रता से समझौता करने से और भी बुरे परिणाम होंगे।

कई दशकों बाद, एज्रा यरूशलेम पहुँचे। उन्होंने पाया कि कुछ इस्राएलियों ने विदेशियों से विवाह करके अपने विश्वास से समझौता किया था (9:1–2)। परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से इस तरह के विवाह को मना किया था क्योंकि यह अनिवार्य रूप से मूर्तिपूजक धार्मिक विश्वासों को अपनाने की ओर ले जाएगा (व्य.वि. 7:3–4; यहो 23:12–13)। यह पाप निश्चित रूप से परमेश्वर के न्याय को लाएगा यदि इसे स्वीकार नहीं किया गया और सुधारा नहीं गया (9:13–15; 10:14)। एज्रा ने लोगों को मूर्तिपूजकों से अलग होने और परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को नवीनीकृत करने के लिए प्रेरित किया (10:1–11)।

कालानुक्रमिक सारांश

एज्रा ने यहूदा में 538 से लेकर लगभग ई.पू. 450 तक की घटनाओं का विवरण दिया है।

ई.पू. 538–536। कुस्रू के आदेश के बाद यहूदियों को अपने देश लौटने की अनुमति दी गई (538 ई.पू., 1:1–4), लगभग 50,000 लोगों का एक समूह यरूशलेम के लिए रवाना हुआ, जहाँ उन्होंने यहूदी समुदाय को फिर से स्थापित किया, एक नई वेदी बनाई (1:5–3:6), और मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू किया (3:7–13)। इन यहूदियों ने स्थानीय अविश्वासियों के साथ मिलकर अपने विश्वासों से समझौता करने से इनकार कर दिया। स्थानीय विरोध ने जल्द ही उनके पुनर्निर्माण प्रयास में सभी प्रगति को रोक दिया (4:1–5)।

ई.पू. 520–515 । लगभग दो दशक बाद, परमेश्वर ने अपने लोगों को मंदिर का पुनर्निर्माण को प्रेरित करने के लिए और जारी रखने के लिए भविष्यद्वक्ता हाग्गै और जकर्याह का उपयोग किया (5:1–6:12)। यहूदियों ने इस चुनौती का प्रतिउत्तर दिया, और फारस के समर्थन से, मंदिर को ईसा पूर्व 515 में बिना किसी और हस्तक्षेप के पूरा किया (यह भी देखें हाग 1:2–6; जक 4:9; 6:12–15; 8:9)।

ई.पू. 486–445। यहूदियों को बाद में शहर और इसकी दीवारों के पुनर्निर्माण के अपने शुरुआती प्रयास के दौरान विरोध का सामना करना पड़ा (एज्रा 4:6–23)।

458 ई.पू.। एज्रा सरकारी मामलों का प्रबंधन करने के लिए यरूशलेम की यात्रा पर गया (7:1–26)। उसे पता चला कि कुछ लोग मूसा के नियमों का पालन नहीं कर रहे थे, बल्कि अविश्वासियों से शादी कर रहे थे और इस्राएल को अपवित्र कर रहे थे। एज्रा ने परमेश्वर की दया के लिए मध्यस्थता करने के बाद, इस मामले की आधिकारिक न्यायिक जांच का नेतृत्व किया। कई इस्राएलियों ने अपने पापों से पश्चाताप किया और अपनी अन्यजाति पत्नियों को तलाक दे दिया (9:1–10:44)।

445 ई.पू.। नहेमायाह यरूशलेम पहुंचे और बहुत विरोध और कठिनाई के बीच इसकी दीवारों के पुनर्निर्माण में सफल हुए (देखें नहे 1–7)।

लेखक

परंपरागत रूप से, एज्रा और नहेम्याह को एज्रा द्वारा लिखी गई एक ही पुस्तक माना जाता है। एक शास्त्री (लेखक) के रूप में, एज्रा के पास पुस्तक में शामिल कई आधिकारिक दस्तावेज़ों तक पहुँच होगी।

कुछ लोगों का यह भी मानना है कि एज्रा ने इतिहास की पुस्तकें लिखीं क्योंकि 2 इतिहास की अंतिम आयतें (2 इति 36:22–23) एज्रा की पहली आयतों (एज्रा 1:1–3) से बहुत मिलती-जुलती हैं। इन पुस्तकों में समान शब्दावली और समान धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण हैं। हालांकि, कई विद्वान इस निष्कर्ष को खारिज करते हैं, यह तर्क देते हुए कि इतिहास और एज्रा—नहेम्याह के बीच की भाषाई और धर्मशास्त्रीय भिन्नताएँ समानताओं से कहीं अधिक हैं।

भाषा और स्रोत

पुराने नियम का अधिकांश भाग इब्रानी भाषा में लिखा गया था, लेकिन एज्रा की पुस्तक में दो खंड अरामी में लिखे गए हैं (4:8–6:18 और 7:12–26), जो फारसी साम्राज्य की आम भाषा थी। इन खंडों में छह आधिकारिक दस्तावेज हैं: रहूम का पत्र राजा अर्तक्षत्र को (4:8–16), अर्तक्षत्र का पत्र रहूम को (4:17–22), तत्तनै का पत्र राजा दारा को (5:6–17), कुस्रू का आदेश यरूशलेम में मंदिर बनाने के लिए (6:3–5), दारा का पत्र तत्तनै को (6:6–12), और अर्तक्षत्र का पत्र एज्रा को (7:12–26)। इन दस्तावेजों की प्रामाणिकता एज्रा के विवरण की ऐतिहासिक सत्यता को प्रमाणित करने में सहायता करती है।

एज्रा में कई दस्तावेज शामिल हैं जो इब्रानी भाषा में लिखे गए हैं: कुस्रू का फरमान (1:2–4); मन्दिर के बर्तनों की सूची (1:9–11); उन इस्राएलियों की सूची जो पहले यरूशलेम लौटे थे (2:1–69); उन लोगों की सूची जो एज्रा के साथ लौटे थे (8:1–14); खजानों की सूची जो एज्रा अपने साथ यरूशलेम लाए थे (8:26–27); और उन पुरुषों की सूची जिन्होंने अन्यजाति पत्नियों को तलाक दिया था (10:18–44)। इन सूचियों ने यहूदी लोगों को आश्वस्त किया कि एज्रा ने सही अभिलेख रखे हैं। मंदिर में केवल मूल पवित्र वस्तुओं का ही उपयोग किया जाएगा, केवल इस्राएलियों की आधिकारिक सूची में शामिल लोग ही मंदिर में आराधना कर सकते हैं, और केवल वे पुरुष जिन्होंने मूर्तिपूजक पत्नियों को तलाक दिया है, उन्हें ही परमेश्वर के पवित्र लोगों में शामिल किया जाएगा। इन विवरणों को शामिल करके, एज्रा ने इस बात का बहुत ध्यान रखा कि क्या पवित्र था और क्या नहीं।

अर्थ और संदेश

बाबेल में बँधुआई से यरूशलेम लौटते समय परमेश्वर के लोगों ने खुद को असहाय महसूस किया। यरूशलेम की अपनी लंबी यात्रा में उन्हें लुटेरों के खतरे का सामना करना पड़ा, यरूशलेम में उनके पड़ोसियों द्वारा विरोध किया गया, फारसी सरकार की नीतियों को प्रभावित करने में असमर्थता और खंडहर हो चुके राष्ट्र के पुनर्निर्माण का बहुत बड़ा काम करना पड़ा। जब इतनी सारी चीजें उनके नियंत्रण से बाहर थीं, तो वे परमेश्वर का अनुसरण कैसे कर सकते थे? एज्रा चार मुख्य विषयों पर ध्यान केंद्रित करता है, यह समझाने के लिए कि परमेश्वर अपने लोगों के जीवन में अपनी इच्छा कैसे पूरी करता है।

1. जो कुछ भी होता है वह इस्राएल के इतिहास पर परमेश्वर के संप्रभु नियंत्रण का परिणाम है। परमेश्वर ने कुस्रू को यहूदियों को सत्तर साल के बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटने की अनुमति देने के लिए प्रेरित किया (एज्रा 1:1–4)। परमेश्वर ने यह भी वादा किया कि मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए अन्य देशों से खजाने यरूशलेम में आएंगे ((हाग् 2:7–8); ऐसा हुआ (एज्रा 6:6–12) क्योंकि परमेश्वर ने दारा का हृदय बदल दिया (6:22)। बाद में, जब एज्रा यरूशलेम आया, तो परमेश्वर ने अर्तक्षत्र को एज्रा को उसकी ज़रूरत की हर चीज़ देने के लिए प्रेरित किया (7:6)। और यह परमेश्वर ही था जिसने यहूदियों को यरूशलेम की यात्रा के दौरान हमले से बचाया (8:22, 31)। एज्रा ने पहचाना कि राष्ट्र का भविष्य परमेश्वर के हाथ में था (9:6–15)। केवल एक विश्वासी जो आश्वस्त है कि परमेश्वर इस दुनिया पर संप्रभु है, संघर्ष, कठिनाई और निराशा के बीच में परमेश्वर के प्रति वफादार रहने में सक्षम होगा।

2. परमेश्वर के लोगों को इस संसार में पाप से शुद्ध और अलग रहना चाहिए। हारून (7:1–5) के वंश से एक याजक एज्रा, अलगाव के बारे में अपने विश्वास में दृढ़ था। शुरुआती लौटने वाले भी ऐसे ही थे जिन्होंने स्थानीय मूर्तिपूजक लोगों के साथ सहयोग करने से इनकार कर दिया (4:1–5)। जबकि इससे कई वर्षों तक निराशा और संघर्ष हुआ, लोगों को पता था कि वे अपने विश्वास की शुद्धता से समझौता नहीं कर सकते और फिर भी परमेश्वर के लोग बने रह सकते हैं। जब एज्रा बाद में यरूशलेम पहुँच गया, तो वहाँ रहने वालों में यह प्रतिबद्धता स्पष्ट नहीं थी (9:1–2)। एज्रा ने संकट को पहचाना (9:3–15) और लोगों को परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को नवीनीकृत करने और खुद को मूर्तिपूजकों से अलग करने के लिए प्रेरित किया (10:1–11)।

3. परमेश्वर के वचन का पालन करना प्राथमिक महत्व का है। एक शास्त्री के रूप में, एज्रा परमेश्वर के नियम शास्त्र का अध्ययन करने और उसका पालन करने तथा दूसरों को इसे सिखाने के लिए दृढ़ संकल्पित था (7:10)। एज्रा ने बार-बार पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के निर्देशों की ओर इशारा करके अपने निर्णयों की व्याख्या की। फारस के राजा ने एज्रा को मूसा के नियमों को सिखाने और लागू करने का निर्देश दिया था (7:14, 23–25), और एज्रा ने ठीक यही किया (उदाहरण के लिए, 8:35; 9:1–10:17)।

4. मध्यस्थता प्रार्थना परमेश्वर की करुणा और शक्ति को आमंत्रित करती है। एज्रा की पाप-स्वीकृति की प्रार्थना (9:6–15) परमेश्वर की कृपा पाने में विनम्रता का एक आदर्श है। एज्रा जानता था कि ये पापी लोग कठोर शब्दों में दिए गए उपदेश से विचलित नहीं होंगे। इसके बजाय, उसने अपने कपड़े फाड़े, रोया और राष्ट्र के पाप पर विलाप किया। परमेश्वर ने लोगों के हृदय को छेदने के लिए शक्तिशाली रूप से उसके पाप-स्वीकृति का उपयोग किया, और एक महान पुनरुद्धार हुआ (9:6–10:17)। इसी तरह, एज्रा ने पहले उपवास किया था और यरूशलेम की यात्रा पर सुरक्षा के लिए प्रार्थना की थी, यह स्वीकार करते हुए कि केवल परमेश्वर ही उन्हें हमले से बचा सकता है (8:21–23, 31–32)।